धर्म मानवाधिकार हनन का सबसे बड़ा कारण है

विवादास्पद बांग्ला लेखिका तस्लीमा नसरीन से पलाश विश्वास की बातचीत

मध्य कोलकाता के एक बड़े होटल के स्वागत कक्ष से इंटरकाम पर बहुचर्चित बांग्लादेशी लेखिका तस्लीमा नसरीन को दो दिन पहले हुई अनौपचारिक मुलाकात के सिलसिले में साक्षात्कार का वायदा याद दिलाया। वह लिख रही थीं। बोलीं, 'पांच मिनट बाद फोन करती हूं।' पांच मिनट नहीं, पूरे आधा घंटे बाद उन्होंने बुलाया। वह हल्की हरी-सी सलवार-कमीज व दुपट्टे में उत्तर भारत की कोई घरेलू लड़की जैसी लग रही थीं। बोली, 'मैं तो लिख रही हूं... मेरे पास वक्त बहुत कम है।' इस पर मैंने कहा, 'समयांतर एक लघुपत्रिका है। प्रतिनिधि लघुपत्रिका। हिन्दी समाज में आप अत्यंत लोकप्रिय हैं। तरह-तरह के विवादों से घिरी हैं। हिन्दी समाज आपका पक्ष जानना चाहता है। थोड़ा-सा वक्त दें और अपना पक्ष रखें। सवाल न भी किए जाएं, आपको जो मुद्दा जरूरी लगे, उस पर जरूर बोलें।' तस्लीमा ने बोलना शुरू किया तो समय की पाबंदी स्वत: खत्म होती चली गई। दिल की गहराई से बोल रही थीं वह, बेझिझक, कोई शंका, आशंका, दुविधा नहीं। भाषा एकदम- आत्मीय बांग्ला, जिसमें अंग्रेजी, उर्दू या किसी दूसरी भाषा का एक शब्द नहीं। हर शब्द, हर वाक्य एकदम सटीक। तस्लीमा बहुत कुछ बोलीं। बहुत विस्फोटक बोलीं। सनसनीखेज सुर्खियां रोज छपती हैं उन्हें लेकर, यहां मकसद बेवजह सनसनी नहीं, बल्कि तस्लीमा के पक्ष को ईमानदारी से पेश करना है। तस्लीमा का जन्म 25 अगस्त 1962 को मैमनसिंह में हुआ। वहीं से उन्होंने एम.बी.बी.एस. किया। लज्जा, निर्वाचित कॉलम, नष्ट मेयर नष्ट गद्य, निर्वाचित कविता तथा मेरे बचपन के दिन आदि उनकी कई चर्चित रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद हो चुका है। तस्लीमा में जो लेखकीय साहस या दुस्साहस जो भी कहें, वह अतुलनीय है। धर्म और राजसत्ता के खिलाफ सक्रिय इस जंगी लेखिका ने फतवे के विरुद्ध किसी तरह का कोई अनुरोध नहीं किया। उन्हें बिना बताए कोशिश यह की जा रही है कि इस साक्षात्कार में कम से कम ऐसा कुछ नहीं छपे जिससे उनकी मुश्किलें बढ़े। बातचीत के दौरान सभी मुद्दों पर तस्लीमा ने साफ-साफ, किसी की परवाह किए बगैर, अपना पक्ष रखा। राष्ट्रशक्ति, धर्म, पुरुषतंत्र, फासीवाद और साम्राज्यवाद के खिलाफ उनके तेवर अत्यंत तीखे हैं। उनके सभी विवादास्पद बयान जस के तस नहीं रखे जा सकते। सिर्फ वे बातें ही लिखी जा रही हैं जिनका साहित्य और समाज के वृहत्तर मुद्दों से ताल्लुक है।

- आप बांग्लादेश की लेखिका हैं। बांग्ला में लिखती हैं। पर जनता के बीच वर्षों से नहीं हैं। यूरोप में निर्वासित जीवन बिता रही हैं। इस अलगाव की स्थिति में कैसे लिख पाती हैं?

कैसे नहीं लिखूंगी? लिखने की वजह से ही तो इतना कुछ बदल गया है। सब कुछ अस्त-व्यस्त हो गया है। लाखों कट्टरपंथी मेरी हत्या करना चाहते हैं, मुकदमे, मौत के फतवे, बदनामियां, अपना घर, अपने लोग, बंधु-बांधव, आत्मीय-स्वजन, मां-बाप सबसे अलगाव हुआ है। निर्वासित हूं। अकेली औरत। लिखने लगी तो जीवन ही बदल गया। जो सही समझती हूं, वही लिखती हूं। डरती नहीं, हिचकती नहीं। इसीलिए लिखना कैसे छोड़ दूंगी?

- लेकिन यह अलगाव?

अलगाव से समस्या जरूर होती है। क्या करूं बांग्लादेश लौट नहीं सकती। यहां तक कि जब चाहूं कोलकाता तक नहीं आ सकती। क्या करूं, लिखना भी छोड़ दूं? वे मेरा लिखना बंद नहीं कर सकते। मैं अपने अंतर से लिखती हूं।

- क्या लेखन अब सिर्फ स्मृतियों पर निर्भर नहीं है?

मैं हर वक्त बांग्लादेश से जुड़ी हुई हूं। मैं सकुशल नहीं हूं। सकुशल रहें मेरे लोग, मेरा देश! मेरी आंखों में है मेरी मातृभूमि। मेरे दिल में हैं मेरी बांग्ला भाषा। लाखों लोग सिर्फ अपने उन्माद और धर्मांधता में मेरे लेखन के खिलाफ हैं। मेरी स्वतंत्रता छीन ली गई। पर मैं हारी नहीं हूं। मैं आत्मसमर्पण नहीं करती। अलगाव है तो क्या हुआ, बांग्लादेश, मेरे दिल में बसता है। लिखना और सिर्फ लिखते चले जाना मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण है।

- आपके खिलाफ सबसे बड़ा आरोप है कि आपका बहुचर्चित उपन्यास लज्जा भारत में हिन्दू राष्ट्रवाद के

झंडेबरदारों का सर्वश्रेष्ठ हथियार बन गया है। फासिस्ट ताकतों के खिलाफ आप खामोश हैं। आपका जिहाद सिर्फ इस्लाम के खिलाफ है। कम्युनिस्ट भी आपका इसीलिए विरोध करते हैं?

तो क्या कम्युनिस्ट इस्लामपंथी हैं? कम्युनिस्टों को तो नास्तिक होना चाहिए। मार्क्सवाद धर्म को अफीम कहता है। मार्क्सवादी धर्म के पक्ष में क्यों खड़े होते हैं? मैं हर तरह के धर्म, हर तरह के कर्मकांड के खिलाफ हूं। मैं दुनियाभर में अल्पसंख्यकों पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ हूं। फासिज्म और सांप्रदायिकता के विरुद्ध हूं।

- गुजरात के दंगों को लेकर जब इस देश के तमाम संस्कृतिकर्मी मोर्चाबंद हैं, आपके इतने साक्षात्कार छप रहे हैं, पर किसी भी सार्वजनिक बयान में आपने गुजरात की चर्चा नहीं की।

अखबार वाले अपने हिसाब से साक्षात्कार छापते हैं। खबरों में सब कुछ कहां आ पाता है? मैंने बांग्लादेश में अपने स्तंभ मैं गुजरात पर लिखा है। यूरोप में तमाम जगह लिखा है। पर इसकी कहीं चर्चा नहीं हुई। मैंने लिखा है : बहुसंख्यक सांप्रदायिकता का शिकार है गुजरात। वहां एकतरफा नरसंहार हो रहा है।

मैंने बहुत कड़ा विरोध किया है गुजरात के नरसंहार का। मैंने लिखा है : मानवता पूड़े गेछे, उड़े गेछे धर्मेर निशान। मैं हर तरह के कट्टरपंथ के खिलाफ हूं। मनुष्य पर जहां भी जुल्म ढाए जा रहे हों, मैं वह मनुष्यता के पक्ष में खड़ी हूं।

- आपने लज्जा में लिखा, बांग्लादेश में अत्याचारों से तंग हिंदू भागकर भारत चले आते हैं। पीड़ितों को भारत में स्वर्णिम भविष्य दिखता है। भारत में आकर आपके पात्रों पर क्या बीती है, क्या आपकी जानने की इच्छा नहीं होती?

कैसे जान सकती हूं? मैं तो यहां रही नहीं हूं। मैं बांग्लादेश के बारे में लिखती हूं, क्योंकि बांग्लादेश के बारे में जानती हूं। यहां लोगों के क्या हाल हैं जानने के लिए मुझे यहीं रहना होगा।

- लज्जा के असंख्य संस्करण निकले। आपने बार-बार उसे संशोधित किया। बांग्लादेश में बहुत लोगों की शिकायत है कि इस उपन्यास में बांग्लादेश का एकतरफा चित्रण है। उपन्यास के कथा के अलावा सौंदर्यशास्त्रीय प्रतिमानों में इसे कमजोर उपन्यास बताया जाता है। क्या आपने लज्जा पर पुनर्विचार किया है?

  पुनर्विचार कैसा? क्या मैंने सच नहीं लिखा? सच पर पुनर्विचार कैसा?

  - आपके दृष्टिकोण में कोई अंतर नहीं आया?

  नहीं, क्योंकि हालात नहीं बदले हैं। सत्य नहीं बदला है। सौंदर्यशास्त्रीय प्रतिमानों की मुझे ज्यादा चिंता नहीं है। शिल्प से क्या फर्क पड़ता है! लज्जा में सच का नंगा रूप है, इसीलिए यह लोगों को विचलित करता है। सौंदर्यशास्त्र से सच बदल नहीं जाता।

  - इस्लाम धर्म और मुस्लिम समाज पर लज्जा को लेकर सबसे ज्यादा विवाद है। मौत के फतवे भी इसीलिए हैं। लेकिन सही मायने में तो आपका विरोध सिर्फ विरोध के लिए नहीं हैं। आप बांग्लादेश और खासतौर पर मुस्लिम समाज के मौजूदा हालात में बदलाव चाहती हैं। क्या आपको नहीं लगता कि आपका पक्ष कायदे से पेश नहीं किया गया। कहीं कोई जबर्दस्त मिस कम्युनिकेशन है। हो सकता है, आप उतनी इस्लाम-विरोधी न हों, जितना प्रचारित किया जाता है?

  बांग्लादेश में मैंने इस्लाम का भयंकर स्वरूप देखा है। इस्लाम वहां राजसत्ता का सबसे कारगर हथियार है। इस्लाम में व्यक्ति स्वतंत्र का निषेध है। इस्लामी व्यवस्था के कारण ही बांग्लादेश में महिलाओं को सामान्य मानवाधिकार भी हासिल नहीं है। धर्मांधता और सांप्रदायिक राजनीति के कारण ही अल्पसंख्यकों पर अमानुषिक, बर्बर अत्याचार हैं। मैंने सिर्फ सच लिखा है। इसी सच को इस्लाम का विरोध मान लिया गया। मैं किसी अन्य धर्म को भी पसंद नहीं करती हूं। मैं जिस समाज में रहती हूं, जिस देश में रही हूं, उसके बारे में ईमानदारी से लिखा है। कुछ नहीं छुपाया। अपने बचाव के बारे में कभी नहीं सोचा। यही मेरा अपराध है।

  - आपके रचना-संसार को पुरुष विरोधी माना जाता है। हम जानते हैं, स्त्री विमर्श पर आपकी अपनी

अवधारणाएं हैं। पर कहा जाता है कि आपका नारीवाद पश्चिम की नकल है। जबकि बांग्लादेश में बेगम सूफिया कमाल, जहांनारा आलम जैसी महिलाएं आजीवन स्त्रियों के अधिकार के लिए लड़ती रहीं। वे आपसे ज्यादा विद्रोहिणी रही हैं, पर उन्होंने बांग्लादेश नहीं छोड़ा?

क्या 'लज्जा' पुरुष विद्वेसी रचना है?

मैंने सिर्फ सच लिखा है यह सच पुरुषतंत्र के खिलाफ है। पुरुषतंत्र के खिलाफ यह बगावत पश्चिम की नकल नहीं है। मैं 'विमैन्र्स लिब' से प्रभावित नहीं हूं। यह लड़ाई कोई नई लड़ाई नहीं है। पर स्त्री अधिकार की इस लड़ाई के कारण ही मेरे खिलाफ मौत के फतवे हैं। मैं सिर्फ धर्म की वजह से उत्पीड़ित एक नारी हूं। मैंने उसी धर्म के खिलाफ जिहाद छेड़ा है। फर्क यहां है। सभी लोग हकीकत जानते हैं, पर धर्म के खिलाफ कोई नहीं बोलता। सारी बातें लिख देंगे, धर्म के खिलाफ नहीं लिखेंगे। मैंने लिखा है और लिखती रहूंगी। जब तक धर्म का अस्तित्व रहेगा, नारी की मुक्ति नहीं हैं। दलितों की मुक्ति नहीं है... मनुष्य की मुक्ति के लिए धर्म का लोप अनिवार्य है। धर्म मानवाधिकार के विरुद्ध है।

- आपने दलितों की बात की, तो क्या आप दलित आंदोलन के पक्ष में हैं?

हां, मैं दलितों के पक्ष में हूं। स्त्री दलित है। स्त्री की कोई जाति नहीं होती। उसका कोई धर्म नहीं होता। वह सिर्फ इस्तेमाल की वस्तु है। चूंकि धर्म में ही उसके इस्तेमाल का प्रावधान है इसलिए मैं नास्तिक हूं। धर्म के खिलाफ हूं। धर्म से मजबूत होता है पुरुषतंत्र। मैं पुरुषों के खिलाफ नहीं हूं। पर धर्म अनुमोदित पुरुषतंत्र के खिलाफ हूं। दलितों पर हमले, अत्याचार भी धार्मिक कारणों से ही होते हैं। धर्म के कारण ही वे दलित हैं।

- इस्लामी आतंकवाद और आतंकवाद के विरुद्ध अमेरिका का युद्ध, इस पर आपकी राय?

सबसे बड़ा आतंकवादी तो अमेरिका है। ओसामा बिन लादेन और अल कायदा आतंकवादी हैं पर उन्हें किसने पैदा किया अमेरिका ने। वियतनाम में अमेरिका ने क्या किया? इराक में? चिली, क्यूबा, निकारागुआ में ऐसा कौन-सा देश है, जिस पर अमेरिकी आतंकवाद का असर नहीं है? हिरोशिमा-नागासाकी को भूल गए? व्यक्ति आतंकवाद से बहुत ज्यादा खतरनाक है राष्ट्र का आतंकवाद।

- आप तो कम्युनिस्टों की भाषा बोल रही हैं।

मनुष्य होने के लिए कम्युनिस्ट होना जरूरी है। धर्म और साम्राज्यवाद के विरोध के लिए मनुष्यता के पक्ष में खड़ा होना पर्याप्त है। मैं मानवतावादी हूं।

- फिलिस्तीन समस्या पर आपकी राय?

यहां राष्ट्र का आतंकवाद है। यहूदी आतंकवाद। साम्राज्यवादी नरसंहार है। मुसलमानों के खिलाफ युद्ध-घोषणा है। राष्ट्र प्रायोजित नरमेध-यज्ञ है जो अमानुषिक है। फिलिस्तीन मसले पर अमेरिका की भूमिका की मैं निंदा करती हूं।

- मातृभाषा आंदोलन और बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम के दरम्यान बदलाव के जो ख्वाब हमने देखे, शहीदों के बलिदान के बदले में क्या वह बांग्लादेश हमें मिला? शहादत की क्या यही नियति है?

(बहुत दु:खी मन से) बदलाव के ख्वाब ख्वाब ही रह गए। बांग्लादेश में इस वक्त परिस्थितियां बहुत भयंकर हैं। शहादतें बेकार हो गई हैं। बांग्ला भाषा और बांग्ला संस्कृति का इस्लामीकरण हो रहा है। इसे लेकर ही तो पाकिस्तान के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी हमने। अब उसी को अंगीकार कर रहे हैं। यह भयावह है।

- जिस पाकिस्तानी साम्राज्यवाद के खिलाफ बांग्ला अस्मिता की लड़ाई लड़ी गई, ऐसा लगता है, पाकिस्तान का वही इस्लामी राष्ट्रवाद बांग्लादेश का आदर्श बन गया है। नई पीढ़ी पाकिस्तान परस्त है?

नहीं, ऐसा भी नहीं है। ज्यादातर लोग अब भी इस्लामी राष्ट्रवाद और पाकिस्तान के खिलाफ हैं। पर वे

खामोश हैं। सबसे ज्यादा मुखर हैं कट्टरपंथी। उन्हीं का वर्चस्व है। वे सत्ता में हैं। दो बड़े राजनीतिक दल हैं, जिन्हें स्पष्ट बहुमत नहीं मिलता, कट्टरपंथियों की मदद के बगैर कोई सरकार नहीं बन पाती। कट्टरपंथी मंत्री हैं। बहत्तर, तिहत्तर में कोई सोच नहीं सकता था, कल्पना से परे था यह कि पाकिस्तान समर्थकों का फिर ऐसा वर्चस्व होगा। लोकतंत्र की बलि दे दी जाएगी इस्लाम के नाम पर। अल्पसंख्यकों के विरुद्ध सर्वगासी दंगे होंगे। स्त्री सुरक्षित नहीं रहेगी। खत्म होती चली जाएगी बांग्ला अस्मिता। बांग्ला संस्कृति का ह्रास हो जाएगा- यही सब हो रहा है। धर्म निरपेक्ष ताकतें अगर मजबूत नहीं होतीं तो आने वाले दिन और भयंकर होंगे, सोचकर मेरी आत्मा कांप उठती है।

- तो कट्टरपंथी बहुमत में हैं बांग्लादेश में इस वक्त?

नहीं, वे अल्पमत में हैं। पर तेजी से बढ़ रहे हैं। जल्दी ही वे बहुमत में हो जाएंगे। सत्ता के द्वारा धर्म का मानवाधिकार हनन-औजार के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है। सरकार नियंत्रित मीडिया धर्मांधता फैला रहा है। सांप्रदायिक उन्माद का माहौल बन रहा है। गांव-गांव में मदरसा खुल रहे हैं। इतने मदरसे पहले कभी नहीं थे। वहां बांग्ला संस्कृति का निषेध है। सब-कुछ इस्लामीकरण में समाहित। कट्टरपंथी तैयार करने के कारखाने खुल रहे हैं जहां-तहां। मदरसे ऐसे ही कारखाने हैं मौजूदा स्वरूप में।

- प्रतिरोध के कोई उपाय नहीं है?

है, प्रतिबद्ध जनजागरण अभियान सबसे आवश्यक है। धर्मांधता और सांप्रदायिकता के खिलाफ जनचेतना का प्रसार ही सबसे कारगर हथियार है।

- बांग्लादेश स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को लेकर क्या गलत विवाद नहीं चल रहे हैं?

सभी देशों में ऐसा होता है। शासक वर्ग अपने हिसाब से इतिहास लिखने की कोशिश करता है। इतिहास विकृत करता है। पर सच्चाई छुपती नहीं है। इतिहास हमेशा सच बोलता है। बांग्लादेश स्वतंत्रता संग्राम में मुजीबुर रहमान की भूमिका थी या नहीं, वह बांग्लादेश के राष्ट्रपिता हैं या नहीं, यह भविष्य तय करेगा। इसे लेकर बेमतलब बहस है। बांग्लादेश के दोनों मुख्य राजनैतिक दलों को यह विवाद छोड़कर राष्ट्र के सामाजिक विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

- बांग्लादेश दुनिया के सबसे गरीब देशों में एक है। भूमंडलीकरण के इस दौर में साम्राज्यवादी अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में विपर्यस्त तीसरी दुनिया, विनिवेश, उदारीकरण, छंटनी, कम्प्यूटरीकरण और विकास का अमेरिकी मॉडल... क्या इससे बांग्लादेश और भारतीय उपमहाद्वीप का भला हो सकेगा?

नहीं होगा। मैं भूंमडलीकरण के सर्वव्यापी उपभोक्तावाद के विरुद्ध हूं। हर चीज को वस्तु बना दिए जाने और सर्वग्रासी बजारवाद के विरुद्ध हूं। मैं समझती हूं कि औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में मानवाधिकार का हनन हो रहा है।

- लेकिन बांग्लादेश में साहित्यकार, संस्कृतिकर्मी और प्रगतिशील संगठन मजबूती से आपके पक्ष में खड़े नहीं हुए?

नहीं हुए। पर इसका मतलब यह नहीं कि वे मेरे खिलाफ हैं। वे अच्छी तरह जानते हैं, सच क्या है। पर सच लिखने और बोलने से डरते हैं वे। वे धर्म और सत्ता के विरुद्ध जुबान नहीं खोलते, बस, इतनी-सा बात है।

- इस वक्त बांग्लादेश से आपका कैसा संपर्क है?

सिर्फ फोन पर बातचीत होती है। मेरी स्वतंत्रता का हरण कर लिया गया है। बहुत सारी बंदिशें हैं मुझ पर।

- बांग्लादेश में आपके विरुद्ध जो मुकदमे चल रहे हैं, उनकी क्या स्थिति है?

सारे मुकदमे मेरे वकील लड़ रहे हैं। बहुत सारे मुकदमे हैं। सभी मामलों में मेरे खिलाफ गैर जमानती वारंट हैं, धारा 295-ए के तहत। ब्रिटिश क्रिमिनल कोड जारी है अब भी बांग्लादेश में।

- आपने बंगाल सरकार से फ्लैट मांगा है, इसे लेकर नया विवाद पैदा हुआ है।

यह विवाद अखबारों ने पैदा किया। मैंने सरकार से कोई फ्लैट नहीं मांगा है। मैं चाहती हूं, हर साल मुझे कोलकाता आकर लंबे समय तक रहने की अनुमति मिले, वीसा मिले। बांग्लादेश तो मैं नहीं जा सकती। मेरी मां मर गई तब भी नही जा पाई। यहां रहूंगी तो बीच-बीच में बांग्ला भाषा और बांग्ला संस्कृति के बीच रहूंगी।

- लज्जा और दूसरी गद्य रचनाओं से उठे विवाद की वजह से कवि तस्लीमा नसरीन उपेक्षित है, जबकि आप बहुत सशक्त कवयित्री हैं?

मैं सच लिखने के लिए विभिन्न विधाओं का इस्तेमाल करती हूं, किसी विधा पर चर्चा हुई या नहीं हुई, इससे फर्क नहीं पड़ता।

- बांग्लादेश स्वतंत्रता युद्ध के दौरान उम्मीद थी- स्वातंत्रोत्तर बांग्लादेश बहुत नजदीक हो जाएगा। बंगाल विभाजन की त्रासदी भुला दी जाएगी। राजनीति चाहे जो हो, सांस्कृतिक सेतु-बंधन तो होना चाहिए?

नहीं हो पा रहा है सांस्कृतिक सेतु-बंधन। साझा विरासत है बांग्ला संस्कृति की। यह अलगाव सचमुच पीड़ादायक है। इस पर संस्कृतिकर्मियों को पहल करनी होगी।

मुझे उम्मीद है कि जल्दी ही ऐसा दिन आएगा, जब भारतीय उपमहाद्वीप में राष्ट्र की सीमाएं निश्चिह्न हो जाएंगी। वही भाईचारा, वही सांस्कृतिक आदान-प्रदान फिर स्थापित होगा। स्त्रियों और दलितों को उनके अधिकार मिलेंगे। दंगे नहीं होंगे। अल्पसंख्यक सर्वत्र सुरक्षित होंगे। मुझे यकीन है, कभी न कभी वह दिन आएगा। जरूर आएगा।

साभार- समयांतर